जयपुर का इतिहास

- शासन किया – कच्छवा वंश
  (भगवान राम के पुत्र कुश के वंशज)
- कुलदेवी – जमुवाय माता
- अराध्य देवी – शीला देवी – आमेर दुर्ग
- कुलदेवता – अम्बीकेश्वर महादेव – आमेर
- अराध्य देवता – गोविंद देव जी – जयपुर
- प्राचीन काल में इस क्षेत्र को ढूँढाड़ के नाम से जानते थे
- राजधानी –
  (1) दौसा – 1137 ई में दूल्हेराय ने बड़गुर्जरों को पराजित कर बनायी थी
  (2) मांची / जमवारामगढ़ – 1137 ई में दूल्हेराय ने मीणाओं को पराजित कर बनायी
  (3) आमेर – 1207 ई में कोकिल देव ने मीणाओं को पराजित कर राजधानी बनाया
  (4) जयपुर – 1727 ई में सवाई जयसिंह ने बनाई

❖ दूल्हेराय/तेजकरण/ढोला –

- मूल नाम – साल्हकुमार
- कच्छवा वंश का संस्थापक / आदि पुरुष / मूल पुरुष
- रामगढ़ में कुलदेवी जमुवाय माता का मंदिर बनाया
- ढोला मारू की प्रेम कहानी –
- ढोला (नरवर – मध्यप्रदेश के सोढा का पुत्र)
- मारू (पूंगलगढ – बीकानेर के पूंगल की बेटी)
- ढोला मारू की शादी पुष्कर में होती है
- विवाह के समय ढोला –3 साल, मारू – 1.5 साल की थी

नोट – ढोला मारू रा दूहा – कवि कल्लोल
ढोला मारू लोकगीत – सिरोही
ढोला मारू चित्रशैली – जोधपुर
R.T.D.C होटल ढोला मारू – बीकानेर

❖ कोकिलदेव –

- मीणाओ को हराकर आमेर को 1207 ई में राजधानी बनाया
- अम्बीकेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण कराया था

❖ पंचवनदेव –

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने इनको महोबा का प्रशासक नियुक्त किया
- तराईन के युद्ध में पृथ्वीराज की ओर से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ

❖ राजदेव –

- आमेर में कदमी महल का निर्माण कराया, यहाँ पर आमेर के शासको का राजतिलक मीणाओं द्वारा किया जाता था

❖ पृथ्वीराज कच्छवा–

- आमेर राज्य को अपने 12 पुत्रों में बाँट दिया, आमेर 12 कोटडी कहलाया
- प्रमुख जागीर – राजावत, नाथावत, खंगारोत, बांकावत
- 1527 ई में खानवा के युद्ध में राणा सांगा की ओर से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ
- इनके काल में गलता जी (जयपुर) में कृष्णदास पयहारी ने रामानंदी संप्रदाय की स्थापना की

❖ रतनसिंह –

- शेरशाह सूरी की अधीनता स्वीकार की

❖ भारमल (1547–1574 ई)–

- 1562 में बादशाह अकबर ने अजमेर की तीर्थयात्रा की तब भारमल ने 'चगताई खाँ' की सहायता से अकबर से भेंट की
- भारमल ने अपनी पुत्री हरका बाई / मानमति / शाही बाई का विवाह 6 फरवरी 1562 को सांभर में अकबर से कर दिया, इनसे सलीम / जहाँगीर का जन्म हुआ, जहाँगीर ने अपनी माता हरका बाई का नाम मरियम उज्जमानी रखा
- राजपूताना के पहले शासक जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की और वैवाहिक संबंध बनाये
- अक़बर ने भारमल को 5000 का मनसबदार बनाया तथा राजा व अमीर–उल–उमरा की उपाधि दी

नोट – अक़बर भारमल की पहली मुलाक़ात 1556 में मजनू खा ने नारनौल (दिल्ली) में करायी थी

❖ भगवंत दास कच्छवा (1574 –1589)

- अकबर ने इनको भी अमीर उल उमरा की उपाधि दी और 5000 का मनसबदार बनाया
- चित्तौड़ आक्रमण (1568 ई) में अकबर का साथ दिया
- 13 फरवरी 1585 में भगवंतदास ने अपनी पुत्री मानबाई का विवाह जहांगीर से कर दिया था, इनसे खुसरो का जन्म हुआ था

❖ मिर्जा राजा मानसिंह (1589– 1614 ई) –

- जन्म – 1550 ई मौजमाबाद (दूदू)
- 12 वर्ष की उम्र में ही मुगल दरबार में चले गये
- अकबर + जहाँगीर की सेवा की
- उपाधि – फर्जन्त + मिर्जा राजा (अकबर ने दी)
- 1569 में अपने पिता भगवन्तदास के साथ रणथंभौर के सुर्जन हाड़ा के विरुद्ध प्रथम सैनिक अभियान किया
- 1572 ई सरनाल युद्ध(गुजरात) में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी

- 1573 ई में डूंगरपुर शासक आसकरण को पराजित किया

● काबुल की सूबेदारी (1585-1587) -

- अकबर ने मानसिंह को अपने सौतेले भाई मिर्जा हाकिम के विद्रोह को दबाने के लिए काबुल भेजा
- मानसिंह ने काबुल में मिर्जा हाकिम को हराया तब अकबर ने मानसिंह को 5000 जात – सवार देकर मनसबदार मनाया तथा मिर्जा राजा की उपाधि दी
- काबुल में पाँच कबीलो पर विजय के बाद कबीलों ने अपने ध्वज का हिस्सा फाडकर मानसिंह को दिया था
- इसी पचरंगे ध्वज को जयपुर का राजकीय ध्वज बनाया

● बिहार की सूबेदारी (1587-1594 ई)

- काबुल से मानसिंह का स्थानांतरण बिहार कर दिया क्योंकि वहाँ स्थानीय जागीरदार विद्रोह कर रहे थे
- 2 बार बिहार में सुबेदार रहे यहाँ मानपुर नगर बसाया
- 1592 ई में उड़ीसा के अफगान शासक नासिर खा को पराजित कर मुगल साम्राज्य का अंग बनाया व पुरी (उडीसा) का जगन्नाथ मंदिर अकबर के अधिकार में किया

● बंगाल के सूबेदारी (1594 - 1605 ई)

- अकबर ने 1594 ई में बंगाल का सूबेदार बनाया
- 3 बार बंगाल के सूबेदार रहे
- 1604 ई में पूर्वी बंगाल के राजा केदार कायत को हराकर जस्सोर नामक स्थान से शीला देवी की मूर्ति आमेर लाये
- 1605 ई में बंगाल जीता तब अकबर ने 7000 का मनसबदार बनाया लेकिन बाद में जहांगीर ने मनसबदारी में कमी कर दी थी
- बंगाल में अकबरपुर (वर्तमान नाम – राजमहल) बसाया

नोट– अकबर ने 7000 की मनसबदारी दो व्यक्तियों को दी
(1) मिर्जा राजा मानसिंह
(2) मिर्जा अजीज कोका
सर्वाधिक हिन्दू मनसबदारो की सख्याँ औरगजेंब के काल में (33 प्रतिशत) थी व अकबर के समय 22 प्रतिशत थी

- मिर्जा राजा मानसिंह ने गोविंददेव जी का मंदिर वृन्दावन (उत्तरप्रदेश) में बनाया जिसको बाद में सवाई जयसिंह ने जयपुर में चन्द्रमहल के पास पुनः स्थापित किया
- अकबर के नवरत्नों में शामिल थे
- दरबारी कवि पुण्डरीक विट्ठल ने रागमाला, रागचंद्रोदय, रागमंजरी, नर्तन निर्णय, दूनी प्रकाश ग्रंथों की रचना की
- मानसिंह के समय कवि नरोत्तम ने मानचरित्र रासो, राय मुरारीदान ने मानप्रकाश व जगन्नाथ ने मानसिंह कीर्ति मुक्तावली ग्रंथ की रचना की
- हरिनाथ, सुंदरदास, हापा बारहठ, जगन्नाथ मिर्जा राजा मानसिंह के दरबारी विद्वान थे
- 1614 ई में मानसिंह की इलिचपुर (महाराष्ट्र) में मृत्यु हो गई

❖ भावसिंह (1614 - 1621) -

❖ मिर्जा राजा जयसिंह (1621 – 1667 ई) –

- जयपुर शासकों में सबसे लंबा शासनकाल (46 वर्ष)
- तीन मुगल बादशाहों की सेवा की

(1) जहांगीर – इनके समय अम्बर के विरुद्ध अहमदनगर अभियान किया

(2) शाहजहाँ – इनके समय कंधार अभियान किया, शाहजहाँ ने मिर्जा राजा की उपाधि दी तथा 5000 का मनसबदार बनाया

- शाहजहाँ के साथ बीजापुर और गोलकुण्डा अभियान में दक्षिण भारत गये
- शाहजहाँ द्वारा शाहशुजा के विरुद्ध भेजी गयी मुगल सेना का नेतृत्व किया

(3) औरंगजेब – इनके समय शिवाजी के विरुद्ध अभियान किया

❖ शाहजहाँ के पुत्रो में उत्तराधिकारी संघर्ष –

● बहादुरपुर का युद्ध - फरवरी 1658 ई

- शाहशुजा पर नियंत्रण लगाने के लिए शाहजहाँ ने दाराशिकोह के पुत्र सुलेमान शिकोह व मिर्जा राजा जयसिंह को भेजा, इन्होंने बनारस के पास शाहशुजा को हरा दिया तब शाहजहां ने खुश होकर मिर्जा राजा जयसिंह को 6000 का मनसबदार बनाया

● धरमत (उज्जैन) का युद्ध - 15 अप्रैल 1658 ई

- औरंगजेब + मुरादब्ख़श (मुराद) v/s दाराशिकोह + मारवाड़ शासक जसवंत सिंह + मिर्जा राजा जयसिंह के मध्य हुवा जिसमें औंरगजेंब विजयी हुवा

● सामूगढ़ का युद्ध - 29 मई 1658 ई

- औरंगजेब + मुराद v/s दाराशिकोह के मध्य हुवा जिसमें औंगरजेब विजयी हुवा

● दौराई(अजमेर) का युद्ध - 14 मार्च 1659

- औरंगजेब + मिर्जा राजा जयसिंह (नेतृत्व किया था) v/s दाराशिकोह के मध्य हुवा जिसमें औंरगजेब विजयी हुवा

● पुरन्दर की संधि - 11 जून 1665 ई

- शिवाजी ओर मिर्जा राजा जयसिंह के मध्य हुई
- शिवाजी ने 35 में से 23 किले मुगलों को दे दिए
- शिवाजी के पुत्र शम्भा जी को पाँच हजार का मनसबदार बनाया जायेगा
- संधि की मध्यस्थता – रधुनाथ पंडित अत्रे ने की

● कला व साहित्य –

- इनके दरबार में कवि बिहारीलाल था जिन्होंने बिहारी सतसई ग्रंथ (कुल – 713 दोहे) की रचना की, इनको मिर्जा राजा जयसिंह प्रत्येक दोहे पर सोने की अशर्फी देते थे
- बिहारीलाल का भान्जा कुलपति मिश्र मिर्जा राजा जयसिंह के दरबार में था जिसने कुल 52 ग्रंथों की रचना की
- रामकवि ने जयसिंह चरित्र नामक ग्रंथ की रचना की
- मृत्यु – बुरहानपुर (मध्यप्रदेश) में हुई

❖ सवाई जयसिंह द्वितीय (1700 – 1743 ई)

- पिता – बिशनसिंह
- 7 मुगल बादशाहों की सेवा की
- मूल नाम विजयसिंह था औरंगजेब ने जयसिंह कर दिया व इनकी वाककटूता से प्रभावित हो इनको सवाई की उपाधि दी
- इसके बाद जयपुर शासकों की उपाधि सवाई हो गई

● **जाजऊ का युद्ध– 1707 ई**

- औरंगजेब के पुत्र आजम व मुअज्जम के मध्य हुवा जिसमें सवाई जयसिंह ने आजम का साथ दिया लेकिन आजम युद्ध हार गया
- मुअज्जम ने युद्ध जीतने के बाद अपना नाम बहादुर शाह प्रथम रखा व विजयसिंह को आमेर का शासक बना दिया
- आमेर का नाम मोमिनाबाद कर दिया और यहाँ का फौजदार सैयद हुसैन खां को बनाया

● **देबारी (उदयपुर) समझौता – 1708 ई**

- सवाई जयसिंह (जयपुर) + अजीतसिंह (मारवाड़) + महाराणा अमरसिंह द्वितीय (मेवाड़) के मध्य हुवा जिसमें तय किया गया कि मारवाड़ का शासक अजीतसिंह को बनाकर आमेर का शासक सवाई जयसिंह को बनायेगे व मेवाड़ महाराणा अमरसिंह द्वितीय अपनी पुत्री चंद्रकुँवरी का विवाह सवाई जयसिंह के साथ इस शर्त पर करेंगे कि इनसे उत्पन्न पुत्र आमेर का शासक बनेगा

● **बूंदी के उत्तराधिकारी में हस्तक्षेप –**

- बूंदी के शासक राव बुद्धसिंह की पत्नी अमर कुंवरी (सवाई जयसिंह की बहन) ने अपने पुत्र उम्मेदसिंह के पक्ष में मराठा सरदार राव होल्कर को आमंत्रित किया था क्योंकि सवाई जयसिंह बूंदी का शासक दलेल सिंह को बनाना चाहते थे

● **भरतपुर विवाद –**

- सवाई जयसिंह ने बदनसिंह को ब्रजराज की उपाधि दी व डीग की जागीर दी
- मुहम्मद शाह रंगीला ने सवाई जयसिंह को राज राजेश्वर, राजाधिराज सवाई, सरमद–ए–राजा–ए–हिंद की उपाधि दी

इतिहासकारों ने सवाई जयसिंह को चाणक्य की संज्ञा दी

● **हुरडा (भीलवाड़ा) सम्मेलन – 17/07/1734**

- योजनाकर्ता – सवाई जयसिंह
- उद्देश्य – मराठा शक्ति को रोकने के लिए राजपूताना के सभी राजाओं को एक करना
- अध्यक्ष – मेवाड महाराणा जगतसिंह द्वितीय
- इस सम्मेलन में बूंदी से दलेलसिंह, मारवाड़ से अभयसिंह, बीकानेर से जोरावर सिंह, करौली से गोपालसिंह शामिल हुए

● **धौलपुर समझौता – 1741**

- सवाई जयसिंह व पेशवा बालाजी बाजीराव के मध्य हुवा
- सवाई जयसिंह तीन बार मालवा सूबेदार नियुक्त किए गए

❖ जयपुर की स्थापना – 18 नवंबर 1727

- नींव रखी – पंडित जगन्नाथ ने
- वास्तुकार – विद्याधर भट्टाचार्य (बंगाली)
- 9 वर्ग सिद्धान्त पर बसाया गया
- भारत में बसने वाला प्रथम व्यवस्थित नगर / नियोजित नगर है
- सी.वी. रमन ने इसे रंग श्री द्वीप / आइलैंड ऑफ ग्लोरी कहा
- 7 दरवाजे हैं, सड़कें समकोण पर काटती हैं
- बिशप हैबर के अनुसार जयपुर नगर का परकोटा मास्को के क्रेमलिन नगर के समान है

● **सिटी पैलेस –**

- वास्तविक नाम – चंद्रमहल पैलेस
- राजपरिवार के निवास के लिए बनाया

● **जन्तर – मन्तर –**

- सवाई जयसिंह ने नक्षत्रों की गणना के लिए पाँच वैधशाला बनाई थी
  (1) दिल्ली (सबसे प्राचीन) (2) जयपुर (3) बनारस (4) मथुरा (5) उज्जैन
- जयपुर वैधशाला सबसे बड़ी वेधशाला है जिसे 1 अगस्त 2010 को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची मे शामिल किया गया है, यह भारतीय मौसम विभाग की वैधशाला है

● **खगोल – ज्योतिष**

- सवाई जयसिंह ने 1725 – 1733 तक शुद्ध नक्षत्रों की सारणी (खगोल विज्ञान से संबंधित) बनाई जिसे मुहम्मद शाह रंगीला को भेंट की, यह सारणी जीज मुहम्मदशाही कहलाई
- जयसिंह कारिका नामक ज्योतिष ग्रंथ की रचना की
- खगोल शास्त्र का ज्ञान अपने गुरु जगन्नाथ से सीखा

- इनके दरबार में ज्योतिषी केवलराम भी रहते थे जिन्होंने लोगोरिथम का फ्रेंच से संस्कृत में अनुवाद किया जिसको विभाग सारणी कहा जाता है

- **साहित्य**
- जयसिंह कल्पद्रुम की रचना पुण्डरीक रत्नाकर ने की
- इनके समय प्रसिद्ध विद्वान श्री कृष्ण भट्ट ने ईश्वर विलास महाकाव्य की रचना की इनके अन्य ग्रंथ पद्य मुक्तावली, वृत मुक्तावली, राम गीतम है
- कृष्ण भट्ट को सवाई जयसिंह ने कवि कलानिधि व राम रसाचार्य की उपाधि दी इन्होंने राम – रसा (राघव गीतम) ग्रंथ की रचना की

- **अन्य जानकारी –**
- सवाई जयसिंह गोविंद देव जी की प्रतिमा वृंदावन से जयपुर लाये व चंद्रमहल के पास स्थित जयनिवास बाग में गोविंद देव जी का मंदिर बनाया
- जयपुर के शासक अपने आप को गोविंद देव जी का दीवान मानते हैं
- सवाई जयसिंह अंतिम हिंदू शासक है जिन्होंने अश्वमेघ यज्ञ (पुण्डरीक रत्नाकर की देखरेख में) किया
- सवाई जयसिंह पहला राजपूत शासक था जिसने सती प्रथा को समाप्त करने की कोशिश की, विधवा पुनर्विवाह को लागू करने के नियम बनाए

❖ सवाई ईश्वरी सिंह (1743 – 1750)

- देबारी समझौते के तहत माधोसिंह जयपुर का शासक बनना था किंतु जयपुर के सरदारों ने ईश्वरी सिंह को शासक बना दिया

- **राजमहल (टोंक) का युद्ध – 1 मार्च 1747**
- ईश्वरी सिंह + महाराजा सूरजमल **v/s** माधोसिंह + महाराणा जगतसिंह द्वितीय (मेवाड़) + मल्हार राव होल्कर (मराठा) के मध्य हुवा जिसमें ईश्वरी सिंह की विजय हुवी
- इस विजय के उपलक्ष में ईश्वरी सिंह ने एक सात मंजिला ईसरलाट (वर्तमान – सरगासूली) का निर्माण कराया

- **बगरू का युद्ध – 1748 ई**
- ईश्वरी सिंह **v/s** माधोसिंह + मल्हार राव होल्कर के मध्य युद्व हुवा जिसमें ईश्वरी सिंह की हार हुई
- ईश्वरी सिंह ने माधोसिंह को पांच परगने व मराठों को बड़ी धनराशि देने की बात स्वीकार की
- ईश्वरी सिंह मराठों को हर्जाना नहीं दे पाया तो 1750 ई में मराठों के दबाव में ईसरलाट से कूदकर आत्महत्या कर ली

❖ सवाई माधोसिंह प्रथम (1750 – 1768 ई)

- इनके राजा बनने के बाद मराठों ने फिर धनराशि मांगी
- धन ना मिलने पर मराठा सैनिकों ने जयपुर में उपद्रव मचाया
- जयपुर के नागरिकों ने मराठा सैनिकों का कत्लेआम किया

- **कांकोड (टोंक) का युद्ध – 1759**
- रणथंभौर दुर्ग पर अधिकार करने के लिए माधोसिंह व मराठा सरदार मल्हार राव होलकर के मध्य युद्व हुवा जिसमें माधोसिंह की विजय हुवी

- **भट्वाड़ा (बांरा) का युद्ध – 1761**
- माधोसिंह **v/s** शत्रुशाल (कोटा) + जालिम सिंह झाला के मध्य युद्व हुवा जिसमें शत्रुशाल जीत गये
- सवाई माधोसिंह ने 1763 ई में सवाईमाधोपुर नगर बसाया व शील डूंगरी पहाड़ी (चाकसू–जयपुर ग्रामीण) में शीतला माता मंदिर का निर्माण कराया

❖ सवाई प्रतापसिंह (1778–1803 ई)

- इनके समय जयपुर पर मराठों के सर्वाधिक आक्रमण हुए

- **तुंगा (लालसोट–दौसा) का युद्ध – 28 जूलाई 1787 ई**
- मोरेल नदी किनारे
- सवाई प्रतापसिंह + महाराजा विजयसिंह (मारवाड़) **v/s** महादजी सिंधिया के मध्य हुवा जिसमें महादजी सिंधिया हार गये तो महादजी सिंधिया ने कहा – अगर मैं जीवित रहा तो जयपुर को धूल में मिला दूंगा

- **पाटन का युद्ध – 1790 ई**
- सवाई प्रतापसिंह + महाराजा विजयसिंह (मारवाड़) **v/s** महादजी सिंधिया + डी–बोईन (फ्रांसीसी सेनापति)
- महादजी सिंधिया जीत गये
- डी–बोईन की कब्र मेड़ता (नागौर) में है

- **मालपुरा (टोंक) का युद्ध – 1800 ई**
- सवाई प्रतापसिंह व मराठा सरदार दौलतराव सिंधिया के मध्य युद्व हुवा जिसमें सवाई प्रतापसिंह की हार हुई

- **साहित्य –**
- प्रतापसिंह का काल जयपुर चित्रकला का स्वर्णकाल है
- विद्वानों, संगीतज्ञों के आश्रयदाता होने के साथ–साथ स्वयं भी ब्रजनिधि नाम से कविता लिखते थे (ढूंढाडी+ब्रजभाषा में)

- संगीत गुरु – चांद खा (स्वर सागर ग्रंथ की रचना की)
- काव्य गुरु – गणपति भारती (संगीत सागर ग्रंथ लिखा)
- इन्होंने जयपुर में देवश्री बृजपाल भट्ट के नेतृत्व में संगीत सम्मेलन करवाकर 'राधा गोविंद संगीत सार' नामक ग्रंथ की रचना कराई

- इनके दरबार में 22 संगीतज्ञ, 22 कवि, 22 ज्योतिषी, 22 विषय विशेषज्ञ रहते थे जिन्हें गंधर्व बाईसी / गुणीजन खान कहा जाता था
- महाराष्ट्र से तमाशा लोकनाट्य लेकर आए जिसके कलाकार बंशीधर भट्ट थे

❖ सवाई जगतसिंह द्वितीय–

- मेवाड़ महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णा कुमारी का विवाह जोधपुर शासक भीमसिंह से तय हुआ था परंतु मारवाड शासक भीमसिंह की मृत्यु हो जाने के कारण कृष्णा कुमारी का विवाह सवाई जगतसिंह के साथ तय हुआ

● गिंगोली (डीडवाना–कुचामन) का युद्ध – 1807 ई

- कृष्णा कुमारी को लेकर सवाई जगतसिंह + अमीर खा पिण्डारी **V/S** मानसिंह (मारवाड़) के मध्य हुवा जिसमें सवाई जगतसिंह जीत गये लेकिन बाद में मेवाड़ महाराणा भीमसिंह ने अमीर खा पिंडारी की सलाह पर अजीतसिंह चुंडावत के हाथों कृष्णा कुमारी को जहर दिलवा दिया
- सवाई जगतसिंह पर नर्तकी रसकपूर का काफी प्रभाव था, रसकपूर ने अपने नाम से सिक्के भी चलाए थे
- 1818 में ईस्ट इंडिया कंपनी से संधि कर ली

❖ सवाई रामसिंह द्वितीय (1835– 1880)

- अल्पायु में जयपुर के शासक बने इसलिए अंग्रेज अधिकारी जॉन लुडलो ने जयपुर का प्रशासन संभाला
- जॉन लुडलो ने जयपुर में सती प्रथा, दास प्रथा, कन्या वध, दहेज प्रथा पर रोक लगाने के आदेश जारी किये
- 1844 में जॉन लुडलो के प्रयासो से जयपुर में सर्वप्रथम समाधि प्रथा पर रोक लगी
- 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में महाराजा रामसिंह ने अंग्रेजों की भरपूर सहायता की इसलिए अंग्रेजों ने इन्हें सितार ए हिंद की उपाधि दी तथा कोटपूतली की जागीर दी
- 1844 ई में जयपुर में महाराजा व महारानी कॉलेज, संस्कृत कॉलेज,महाराजा लाइब्रेरी का निर्माण कराया
- 1868 में अकाल राहत कार्य में रामनिवास बाग बनाया

● **अल्बर्ट हाल –1876 ई**

- प्रिंस वेल्स ऑफ अल्बर्ट के आगमन पर रामसिंह द्वितीय ने अल्बर्ट हाल का निर्माण कराया
- वास्तुकार – स्टीवन जैकब
- उद्घाटन – 1887 ई में माधोसिंह द्वितीय के शासनकाल में सर एडवर्ड ब्रेड फ्रोड ने किया
- प्रिंस अल्बर्ट एडवर्ड के 1876 ई में जयपुर आगमन पर रामसिंह द्वितीय ने जयपुर को गुलाबी रंग से रंगवाया
- जयपुर के लिए सर्वप्रथम पिंक सिटी शब्द का प्रयोग स्टेनले रीड ने किया Read only pink
- 1857 ई.में मदरसा हुनरी / राजस्थान स्कूल आफ आर्ट एंड क्राफ्ट की स्थापना की (कला विकास के लिए)
- 1878 ई में राम प्रकाश थियेटर (रंगमंच) की स्थापना की जो उत्तरी भारत का पहला रंगमंच व प्रथम फारसी थिएटर था (लोकनाट्य की कला को बढ़ावा देने के लिए)

❖ सवाई माधोसिंह द्वितीय –

- नाहरगढ़ दुर्ग में अपनी नौ पासवानो के लिए नौ सुंदर महलों का निर्माण कराया
- इनको बब्बर शेर के नाम से भी जाना जाता है
- जब महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी जयपुर आये तब बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के लिए इन्होंने 5 लाख रूपये दिए थे
- जयपुर के सिटी पैलेस में मुबारक महल का निर्माण कराया
- 1902 में एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक समारोह में शामिल होने के लिए इंग्लैंड गये तब गंगा जल से भरे हुए चांदी के दो विशाल जार (पात्र) साथ लेकर गए जो गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नामांकित विश्व के सबसे बड़े जल पात्र हैं (वर्तमान में सिटी पैलेस जयपुर में है)

❖ सवाई मानसिंह द्वितीय –

- जयपुर के अंतिम शासक
- प्रधानमंत्री – मिर्जा इस्माईल (आधुनिक जयपुर का निर्माता)
- बिहार की राजकुमारी गायत्री देवी से विवाह किया
- पोलो के खिलाड़ी थे, पोलो खेलते हुए मृत्यु हो गई
- 29 अगस्त 1949 को राज. उच्च न्यायालय के उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता की थी
- राजस्थान के राजप्रमुख रहे
- 1962 में राज्यसभा के सदस्य व 1965 में स्पेन में भारत के राजदूत नियुक्त हुए